पवित्रा अग्रवाल

जीने की वजह

“ताऊ जी आप बार बार मेरी शादी के विषय में बात करते हैं, इतनी भी जल्दी क्या है? मैं शादी के लिए मना नहीं कर रही पर मुझ लंगड़ी से शादी करेगा कौन ? कोई मिल भी गया तो मुझे उसके साथ जाना पड़ेगा पर मैं आपको किस के सहारे छोड़ जाऊँगी ?"

" बेटा अभी यह सब बातें छोड़, लड़का ढूँढ़ने में भी समय लगता है, पहले यह तो पता चले कि तुझे कैसा लड़का चाहिए?"

"इस विषय में कभी नहीं सोचा ताऊ जी , सोचने की हिम्मत भी नहीं हुई। हर बार घर बाहर स्कूल में उपेक्षा,साथियों के व्यंग्य वाणों की याद आहत करती रही है पर शिक्षित हो, कुछ काम धंधा करता हो, शराबी जुआरी न हो आंशिक विकलांग को प्राथमिकता दूँगी पर इसी कस्बे का हो क्यों कि मैं आपके आस पास रहना चाहूँगी,भले ही अलग रहूँ।पास रह कर आपका और आपके व्यापार का पहले की तरह ही ध्यान रख सकूँ, बस यही कुछ इच्छाएं हैं,बाकी अभी से क्या कह सकती हूँ? "

"ठीक है बेटा अब इसी आधार पर तलाश करुँगा। 'जीवनसाथी मेट्रोमोनियल' में भी रजिस्ट्रेशन करा देता हूँ पर ऐसा मैच नहीं मिला तो?”

"ताऊ जी नहीं मिलेगा तो नहीं करुँगी पर आपसे दूर नही जाऊँगी । आप मेरे ताऊ जी ही नहीं मेरे माता- पिता दोनों हैं। माता पिता की करोना मे मौत के बाद आप न होते तो मुझ विकलांग लड़की का क्या होता ?'...नम आँखों को पौंछते हुए उसने कहना जारी रखा “ उस संकट की घड़ी में सब रिश्तेदार कन्नी काट गए थे, भाई भी शादी करके अमेरिका जा बसा था ... उसने भी कोई सुध नहीं ली।”

तरल आवाज में ताऊ जी ने कहा—“बेटा मैंने तुझ पर कोई एहसान नहीं किया है और अपने को बार बार लंगड़ी या विकलांग मत कह, इस पर तो तू विजय पा चुकी है और मानसिक रुप से तो तू मुझसे भी ज्यादा स्ट्रोंग है। इस दुख के समय में तूने अपने साथ मुझे ,मेरे घर और व्यापार को भी संभाला है।...बच्चे थे नहीं ,तेरी ताई भी नहीं रहीं... तुझे ले आया तो मुझे भी जीने की वजह मिल गई वरना....